Vol 6 Issue 3 April 2016

ISSN No : 2230-7850

International Multidisciplinary Research Journal

Indian Streams Research Journal

Executive Editor
Ashok Yakkaldevi

Editor-in-Chief
H.N.Jagtap

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Manichander Thammishetty
Ph.d Research Scholar, Faculty of Education IASE, Osmania University, Hyderabad.

Mr. Dikonda Govardhan Krushanahari
Professor and Researcher ,
Rayat shikshan sanstha's, Rajarshi Chhatrapati Shahu College, Kolhapur.

International Advisory Board

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

.....More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.org

ISSN: 2230-7850 Impact Factor : 4.1625(UIF) Volume - 6 | Issue - 3 | April - 2016

Indian Streams Research Journal

जनमेजय का नागयज्ञ : मिथकीय पात्र और प्रासंगिकता

कुसुमलता
हिन्दी विभाग , दौलत राम महाविद्यालय,

प्रस्तावना :-

साहित्यकार युगद्रष्टा और युग–प्रवर्त्तक होता है। वह अपनी रचना के माध्यम से अपनी युगीन परिस्थितियों को उद्घाटित करने का प्रयास करता है। प्रसाद युग में भारत पतनावस्था की चरम सीमा पर पहुंच चुका था। साहित्यकार नव–जागरण का संदेश दे रहे थे। राष्ट्रीय समस्याओं को नाटक, कविता, उपन्यास, निबंध आदि विधाओं के माध्यम से चित्रित किया जा रहा था। भारत की शोचनीय अवस्था को देखकर प्रसाद जी ने एक साहित्यकार होने के नाते अपने दायित्व का पूर्ण निर्वाह किया। इस सांस्कृतिक पुनर्जागरण के युग में राष्ट्रीय भावना को जाग्रत करने का प्रयास किया जा रहा था। स्वतंत्रता के लिए पूरे भारत में विद्रोह हो रहे थे। पराधीनता के विरुद्ध राष्ट्रीय जनजागरण के स्वर उभरने लगे थे। नाटक दृश्य–श्रव्य होने के कारण सबसे सशक्त विधा है। तत्कालीन युग की मांग के अनुरूप सामाजिक और राष्ट्रीय समस्याओं पर नाटक लिखे जा रहे थे। नारी की दशा इस युग में अत्यंत शोचनीय थी। समाज–सुधार संस्थाओं द्वारा नारी–सुधार पर बल दिया जा रहा था। लोगों में देश–प्रेम और राष्ट्रीयता की भावना को जगाने के लिए नाटककार देशभक्ति से पूर्ण नाटक लिख रहे थे। नाटककारों ने ऐतिहासिक, पौराणिक कथानकों को अपने नाटक का विषय बनाया। अंग्रेजों की 'फूट डालो और राज्य करो' की नीति भारतीयों के लिए घातक सिद्ध हो रही थी। दिन–प्रतिदिन अंग्रेजों की भारतीयों के प्रति रंग–भेद की नीति, घृणा बढ़ती जा रही थी। भारत देश की जातीय एकता के साथ अंग्रेजी सरकार द्वारा खिलवाड़ किया जा रहा था। हिंदू–मुस्लिम के बीच आपसी वैमनस्य बढ़ता जा रहा था। स्वाधीनता के लिए संघर्ष जोरों पर जारी था। वह युग अव्यवस्था, निराशा और संघर्ष का युग था। अंग्रेजों द्वारा की गई दुर्दशा से नाटककार अनभिज्ञ नहीं थे। विदेशी शासक, जमींदार, महाजन, देशी राजाओं ने भी मिलकर जनता का खूब शोषण किया। नाटक के प्रयोजनों में एक प्रयोजन जन–सामान्य को उपदेश देना भी है। इसी प्रयोजन के अपना ध्येय बनाकर प्रसादयुगीन नाटककारों ने देशभक्तिपूर्ण नाटक लिखे। प्रसाद, लक्ष्मीनारायण, मिश्र, जगन्नाथ प्रसाद मिलिंद, सेठ गोविंददास, उदयशंकर भट्ट, बेचन शर्मा उग्र आदि नाटककारों ने भारतीयों की दयनीय एवं पीड़ित दशा को देखकर नाटक के माध्यम से उनका चित्रण किया। प्रसाद युग दो महायुद्धों के बीच का युग था। नाटक के क्षेत्र में

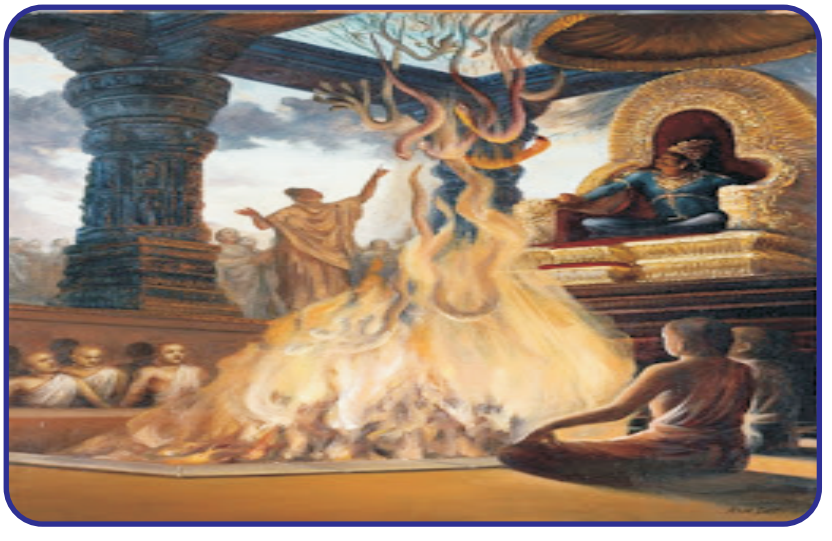

जब प्रसाद जी का आगमन हुआ तब देश पर गहरा राष्ट्रीय संकट मंडरा रहा था। भारतीय जनता की दशा अत्यंत शोचनीय थी। प्रसाद जी ने पौराणिक एवं ऐतिहासिक कथानक के माध्यम से नव–जागरण का संदेश दिया।

प्रसाद–युग सांस्कृतिक नवजागरण का युग था। इस युग में रामकृष्ण मिशन, थियोसोफिकल सोसाइटी, आर्य समाज, ब्रह्म समाज, प्रार्थना समाज आदि संस्थाओं द्वारा राष्ट्र विरोधी शक्तियों के विरुद्ध खड़े होने पर बल दिया गया। 19वीं शताब्दी में अनेक सामाजिक और धार्मिक आंदोलन हुए। इस समय जनमानस में असंतोष था अनेक स्वतंत्रता सेनानियों (मोतीलाल नेहरू, गांधी, लोकमान्य तिलक, जवाहरलाल नेहरू, सरदार पटेल, भगत सिंह, चंद्रशेखर आजाद, लाजपतराय आदि) ने लोगों में देश प्रेम की भावना जगाने का प्रयास किया।

महाभारत एवं हरिवंश पुराण से कथा ग्रहण करते हुए प्रसाद जी ने 'जनमेजय का नागयज्ञ' नाटक लिखा। जातीय–संघर्ष को प्रस्तुत करना नाटककार का मुख्य ध्येय रहा है। इसकी ऐतिहासिकता के संदर्भ में प्रसाद जी लिखते हैं – ''इस नाटक के पात्रों में कल्पित केवल चार–पांच पात्र हैं.... जहां तक हो सका है, इसके आख्यान–भाग में महाभारत काल के ऐतिहासिकता की रक्षा की गई है और इन कल्पित चार पात्रों से मूल घटनाओं का संबंध–सूत्र जोड़ने का ही काम लिया गया..... इस नाटक में ऐसी कोई घटना समाहित नहीं है जिसका

मूल महाभारत और हरिवंश में नहीं।'' यह मिथक युगसापेक्ष है। यह वह युग था जब भारत में हिंदू और मुसलमान जातियों के बीच संघर्ष व्याप्त था। इसी संघर्ष को समाप्त कर दोनों जातियों के बीच ऐक्य स्थापित करने के लिए प्रसादजी ने इस नाटक की रचना की यह नाटक अंग्रेजों की दमनकारी नीति के विरुद्ध लिखा गया। इसमें आर्य एवं नाग जाति के मध्य हुए संघर्ष के इतिहास को प्रस्तुत किया है। कृष्ण इसमें अर्जुन को शूद्र और ब्राह्मण की क्षमता का उपदेश देते हैं। इसमें अर्जुन खांडव–वन दाह करते हैं। इसमें तक्षक भागकर स्वयं को बचा लेता है। जनमेजय अपने पिता परीक्षित के वध का बदला लेने के लिए नागयज्ञ करता है ताकि इस पृथ्वी से संपूर्ण नाग–जाति समाप्त हो जाए। जनमेजय का राजपुरोहित कश्यप षड्यंत्र में नाग जाति का साथ देता है। यहां अंतर्दाह की ज्वाला भड़क उठती है। नाग और ब्राह्मणों में संधि नहीं हो पाती है। परंतु आस्तीक और आचार्य वेद के प्रयास से यह संघर्ष समाप्त हो जाता है।

जिस समय यह नाटक लिखा गया वह युग सांप्रदायिक दंगों की ज्वाला में जल रहा था। हिंदू–मुस्लिम दंगे भारत के कोने–कोने में भड़क उठे थे। भारत के महान नेता इस बात को जान गए थे कि जब तक भारत की दो प्रमुख जातियों (हिंदू–मुस्लिम) के बीच शांति स्थापित नहीं होगी तब तक स्वतंत्रता–प्राप्ति के विषय में सोचना ठीक नहीं था। गांधी जी यह भली भांति जानते थे कि राष्ट्र जिन सांप्रदायिक दंगों की आग में झुलस रहा था उन्हें समाप्त करना इतना आसान नहीं। यह युग घोर निराशा का युग था क्योंकि अब विदेशियों से अधिक देश को अपने ही लोगों से खतरा था। सब एक–दूसरे की जान के दुश्मन बन बैठे थे। अनेक हिंसक घटनाएं जगह–जगह हो रही थीं। इन्हीं सांप्रदायिक दंगों ने भारत को दो भागों में विभाजित कर दिया–भारत और पाकिस्तान। यह विभाजन भारतीय नेताओं और जनता के लिए असहनीय था परंतु सांप्रदायिकता ने इस विभाजन को अनिवार्य बना दिया था।

जनमेजय उदात्त गुणों (उदारता, धैर्य, संयम, दृढ़ता, पराक्रम आदि) से युक्त है। ब्रह्महत्या के भय से जनमेजय अश्वमेघ यज्ञ की तैयारी में जुट जाता है। उसके द्वारा किए गए नाग–यज्ञ में उसकी चारित्रिक कमजोरियां (हिंसक, प्रतिशोधी, अविवेकी, क्रूर, क्रोधी) सामने आती हैं। प्रतिशोध की अग्नि में जलते हुए वह पूरी नागजाति को स्वाहा कर देना चाहता है। वह सरमा के साथ केवल इसलिए न्याय नहीं कर पाता क्योंकि उसने नाग से विवाह किया है। जनमेजय के माध्यम से प्रसाद जी ने अंग्रेजी राज्य पर कटाक्ष करते हुए कहलवाया है–''आपको नहीं मालूम, वे वन्य जातियां किस तरह सभ्य और सुखी प्रजा को तंग किया करती थीं। कन्याओं का अपहरण किया जाता था, धनी लूटे जाते थे, व्यवसाय का मार्ग बंद हो गया था।'' यह अंग्रेजी राज की सच्चाई थी। ब्रिटिश सरकार ने भारतीयों को हर तरह के कष्ट दिए। उनके राज में जनता अपने सुखों से वंचित हो गई। स्त्रियों की दशा दयनीय होती चली गई। अंग्रेजों ने भारतीय उद्योग–धंधों पर ताला लगा दिया था। लोगों से उनका व्यवसाय छीन लिया था। बेरोजगारी के कारण भारतीय जनता की दशा बद् से बद्तर होती जा रही थी।

जनमेजय प्रतिशोध की जिस अग्नि में जल रहा है वह अपने साथ उसमें समस्त मानवता को भस्म करना चाहता है। प्रतिशोध की सोचकर ही वह क्रूर और हिंसक हो जाता है। वह ब्राह्मण–विरोधी भी हो जाता है। वह सोमश्रवा का अपमान करता है। सब ब्राह्मणों को अग्निकुंड में जला देना चाहता है। यही नहीं वह समस्त ब्राह्मण जाति को अपमानित कर अपने देश से निर्वासित कर देता है। उतंक और जनमेजय के परस्पर वार्तालाप में उसका हिंसक रूप उभरकर आता है –

''जनमेजय–उस दिन हमने कहा था कि 'अश्वमेघ पीछे होगा, पहले नाग–यज्ञ होगा।' संभव है कि उस समय वह केवल एक साधारण–सी बात रही हो। परंतु आज वही काम होगा।

उतंक–राजन, वह तो हो चुका है। तक्षशिला–विजय में कितने ही नाग जलाए जा चुके हैं।

जनमेजय–परंतु हवन कुंड में नहीं। अश्वमेघ की विधि चाहे जिसकी कही हो नागयज्ञ आज सचमुच होगा, और वह भी मेरी बनाई हुई विधि से सोमश्रवा से पूछो कि वे इसके आचार्य होंगे या नहीं।

जनमेजय–तक्षक से आज तक इस राजकुल के साथ जितने दुर्व्यवहार किए हैं, उनका स्मरण होगा, मंत्री और उसके सामने उसके कुटुंब की आहुतियां होंगी।''

जनमेजय प्रतिहिंसा पर उतर आता है। उसकी कोमल भावनाएं लुप्त हो जाती हैं। वह अपने पिता की हत्या का प्रतिशोध लेने के लिए हिंसक हो उठता है। नागों के प्रति उसका व्यवहार अत्यंत क्रूर हो जाता है। वह जातीय अभिमान को विस्मृत नहीं कर पाता है। परंतु परिस्थितियों के अनुरूप प्रसाद जी उसके चरित्र में भी परिवर्तन कर देते हैं। वह हिंसक होने के बावजूद व्यास ऋषि के समझाने पर ब्राह्मणों को क्षमा कर देता है। और आस्तिक की याचना पर नाग–यज्ञ बंद कर देता है। और सबसे क्षमा मांगता है। शौनक भी उस पर प्रसन्न होकर उसके सुशासन में शांतिपूर्वक अपने स्वाध्याय की बात कहते हैं।

उतंक निर्भीक, साहसी, कर्त्तव्यनिष्ठ है। उतंक जनमेजय को प्रतिहिंसा के लिए उकसाता है। किंतु इसके साथ ही वह जनमेजय को गीता के कर्मयोग का संदेश देता है। वह जनमेजय को समझाता है कि सत्कर्म कर्मयोग से ही मनुष्य कलंक से छूटता है। अपने कलंक के लिए रोने से ही वह छूट नहीं जाएगा। इसके लिए मनुष्य को सुकर्म करने चाहिएं। मनुष्य जब तक इस रहस्य को नहीं जानेगा वह निपति का दास बना रहेगा। वह जनमेजय को नाग–यज्ञ के लिए प्रेरित करता है और उसे हिंसा की ओर प्रवृत्त करता है। वह स्वयं नाग विनाश चाहता है जिसके लिए वह जनमेजय का सहारा लेता है। उसी के कहने पर जनमेजय जातीय हिंसा करने पर मजबूर होता है। वह जनमेजय से क्रूर एवं हिंसक कार्य करवाता है। उत्तंक और जनमेजय नाग जाति विरोधी हैं। यद्यपि दोनों ने ही नाग जाति को समाप्त करने के लिए बर्बरता पूर्ण नागयज्ञ की योजना बनाई और वह आरंभ भी किया परंतु प्रसाद जी ने सदैव इस ओर ध्यान दिया है कि वे ऐसे पात्र और घटनाओं को चुने जो परिस्थितियों के अनुकूल हैं। इसलिए इन पात्रों की हिंसा को नाटक के अंत में शांत भी कराया है। ताकि तत्कालीन परिस्थितियों में सबसे प्रेरणा ग्रहण कर लोग सत्पथ पर अग्रसर हों।

आस्तिक एक बुद्धिमान और विवेकशील पुरुष है। वह गांधीवादी विचारों की प्रतिच्छाया है। यद्यपि उसके पिता की हत्या भ्रमवश जनमेजय के हाथों हुई परंतु फिर भी वह उन सबको भूलकर शांति का संदेश देता है। वह रक्त रंजित घराने से घृणा करता है। उसे किसी पद या वस्तु का लोभ नहीं है। वह शांतिप्रिय है और समस्त राष्ट्र में शाति का प्रचार–प्रसार करना चाहता है। गांधी जी भी समस्त भारत को एक सूत्र में बांधकर शांति स्थापित करना चाहते थे। आस्तीक गांधीवादी अहिंसा का पुजारी है। वह व्यर्थ की हिंसा को मानवता के विरुद्ध मानता है। अपने इसी अहिंसावाद के कारण वह मां की बात भी नहीं मानता। मनसा चाहती है कि आस्तीक तलवार लेकर जातीय युद्ध में सम्मिलित हो परन्तु आस्तीक इसके लिए तैयार नहीं है। वह अपनी मां को समझाते हुए कहता है – '... किंतु, जब एक–दूसरे प्रकार से नाग–जाति के

भाग्य का निपटारा होने को है, तब इस युद्ध–विग्रह से क्या लाभ? आर्यों का अश्व आएगा, घूमकर चला जाएगा। हम लोगों की स्वाधीनता पर उसका कोई प्रभाव नहीं पड़ता। जब हम युद्ध करके उनके सुव्यवस्थित राष्ट्र का नाश नहीं कर सकते तब उनसे मित्रता रखने में क्या बुराई? यह तो कल्पित मानापमान के रूप में युद्ध–लिप्सा ही दिखाई देता है।'' यह सुनकर मनसा क्रोधित हो जाती है और आस्तीक के युद्ध न करने के निर्णय को सुनकर वह उसे कहती है कि तू मेरा त्याज्य पुत्र है। इस पर भी आस्तीक अहिंसा का ही साथ देने की बात करते हुए कहता है – 'मैं किस प्रकार इस जाति की सहायता करूंगा यह मैं जानता हूँ। तेर फिर मां मैं प्रणाम करता हूँ। तलवार लेकर तो नहीं, पर यदि हो सका तो मैं दूसरे प्रकार से यह विवाद मिटाऊंगा। इस क्रोध की बाढ़ में मैं बांध बनूंगा, चाहे फिर मैं ही क्यों न तोड़कर बहा दिया जाऊं।'

वास्तव में आस्तीक को प्रसाद जी ने अपनी भावनाओं का रूप दिया है। आस्तीक तत्कालीन भारत में व्याप्त हिंदू–मुस्लिम जातियों के बीच शांति स्थापित करने वाला पात्र है। तत्कालीन सांप्रदायिक दुगों की ओर संकेत करते हुए प्रसाद जी आस्तीक को चिंतामग्न दिखाते हैं – ''हम लोगों का कुछ कर्त्तव्य भी है। दो भयंकर जातियां क्रोध से फुफकार रही हैं। उनमें शांति स्थापित करने का हमने बीड़ा उठाया है।'' यहां आस्तीक के चरित्र में तत्कालीन स्वाधीनता आंदोलनकारियों के विचारों की झांकी मिलती है। वह आर्य–नाग संघर्ष को सदा–सदा के लिए समाप्त कर उनमें समन्वय लाना चाहता है।

जनमेजय को जब पता लगता है कि आस्तीक उसी जरतकारू का पुत्र है जिसका वध जनमेजय के हाथों हुआ तो वह जरतकारू की हत्या की क्षतिपूर्ति के लिए आस्तीक को अपना रक्त भी दे देने की बात कता है। आस्तीक चूंकि हिंसा विरोधी है। और वह एक बुद्धिमान युवक भी है। इसलिए वह अपने बुद्धि कौशल से समझ जाता है कि यही वक्त है दो जातियों के परस्पर संघर्ष को समाप्त करने का। वह जनमेजय से स्पष्ट शब्दों में कहता है – ''नहीं, मुझे दो जातियों में शांति चाहिए। सम्राट शांति घोषणा करके बंदी नागराज को छोड़ दीजिए। यही मेरे लिए यथेष्ट प्रतिफल होगा।'' यहां प्रसाद जी को जीवन दृष्टि भी उजागर होती है। आर्य और नाग जाति के संघर्ष को समाप्त करने में आस्तीक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसके चारित्रिक माध्यम से प्रसाद जी ने जनता को प्रेरित किया है कि वे भी परतंत्रता को स्वतंत्रता में बदलने के लिए आपसी संघर्ष को भुलाकर एक हो जाएं ताकि विदेशी शक्ति उनकी इस कमजोरी का लाभ उठाकर उन पर अपना पूर्ण अधिकार स्थापित न कर सके। यह आस्तीक के सत्प्रयासों का ही फल था कि जनमेजय नाग–यज्ञ बंद करवा देता है और सबसे क्षमा मांगता है।

तक्षक एक कूटनीतिक, असत् प्रवृत्तियों वाला पात्र है। परंतु वह अपनी जाति के मान–सम्मान का हित–चिंतक है। वास्तव में तक्षक और जनमेजय दोनों ही दो जातियों (नाग एवं आर्य) का प्रतिनिधित्व करते हैं। दोनों के चरित्र द्वारा प्रसाद जी ने दर्शाया है कि अपनी जाति के मान–सम्मान की चिंता करना प्रत्येक व्यक्ति का धर्म है। परंतु साथ ही यह भी दिखाया है कि जाति से अधिक ऊपर राष्ट्र–हित की भावना है। जनमेजय के प्रतिशोध के विषय में जानकर तक्षक भी उग्र रूप धारण कर लेता है। वह भी प्रतिहिंसा पर उतर आता है जिसमें वह छल, कपट, प्रवचना, अत्याचार सबका सहारा लेता है। वह एक कूटनीतिज्ञ है। वह चाहता है कि किसी तरह धन का लोभ देकर काश्यप को अपनी तरफ मिला लिया जाए ताकि राजकुल के समाचार मिलते रहें। परंतु वह ज्यादा कुछ नहीं कर पाता क्योंकि आस्तीक आर्य और नाग जाति के बीच समन्वय स्थापित कर देता है।

काश्यप राजपुरोहित होने पर भी अर्थ लिप्सा के वशीभूत होकर क्रूर व्यवहार करता है। वह अपने ब्राह्मणत्व को भी लज्जित करता है। काश्यप क्षत्रिय विरोधी है। उसके और जनमेजय द्वारा प्रसाद जी ने ब्राह्मण–क्षत्रिय द्वेष को दर्शाया है। काश्यप लोगों के साथ मिलकर राजा परीक्षित की मृत्यु का कारण बना था। इतना ही नहीं वह नागराज तक्षक के साथ मिलकर अपने ही आश्रयदाता जनमेजय के विरुद्ध षड्यंत्र रचता है। काश्यप ऐसे स्वार्थी ब्राह्मणों का प्रतिनिधित्व करता है जिनका उद्देश ज्ञान प्राप्ति में सहायक होना नहीं बल्कि अपने जीवन–स्तर को बेहतर बनाने के लिए उसे आजीविका का साधन माना। ऐसे ही लोगों से धर्म को भी आघात पहुंचता है। वह लोभी एवं दंभी है। धन की लालसा लेकर ही वह जनमेजय के विरुद्ध नागराज तक्षक का साथ देता है, काश्यप के ऐसे विश्वासघाती चरित्र को देखकर ही मनसा उसे 'घृणित पशु' और 'कृतघ्न' कहकर पुकारती है। नाटक के आरंभ में ही जनमेजय द्वारा दक्षिणा की थाली ग्रहण कर अपने क्रोध को शांत करता है और साम्राज्ञी से भी कुछ दक्षिणा चाहता है। उसकी इसी लोभी प्रवृत्ति का लाभ उठाकर तक्षक उसे केवल कुंडल द्वारा अपनी ओर करने का प्रयास करता है। काश्यप तक्षक को जनमेजय और समाजशास्त्रीय जाति के विरुद्ध भड़काता है। वह जनमेजय के विरुद्ध षड्यंत्र रचते–रचते हिंसक हो जाता है। और अपने ब्राह्मणत्व के गौरव को विस्मृत कर देता है। काश्यप तक्षक को यज्ञ का अश्व ले भागने और राजमहिषी का अपहरण करने की घृणित योजना के बारे में बताता है। उसके ऐसे दुराचरण को देखकर सरमा कहती है कि – ''इस नीच ने आज फिर मायाजाल रचा है।'' आर्य और नागपति के मध्य संघर्ष का मूल कारण काश्यप भी था जिसने अपनी दुर्नीति के लिए दो जातियों को एक–दूसरे के विरुद्ध खड़ा कर दिया। परंतु अंत में काश्यप की मृत्यु द्वारा प्रसाद जी ने अपने उद्देश्य को पूरा किया है। मणिमाला के मुख से कहलवाकर – ''भला कुकर्म का भी कभी अच्छा परिणाम हुआ है।'' प्रसाद जी ने जिस जीवन सत्य को को प्रस्तुत किया है वह तत्कालीन परिस्थितियों के अनुरूप था। सांप्रदायिकता को भड़काने में जो विरोधी एवं देशी शक्तियां कार्य कर रहीं थीं उनके कुकर्मों का परिणाम भी एक दिन यही होना है।

प्रसाद जी ने इस नाटक में कृष्ण और अर्जुन के माध्यम से कर्म की महत्ता दर्शायी है और विश्व कल्याण की बात कही है। कृष्ण अर्जुन को कहते हैं कि मनुष्य का धर्म है कि वह पशु को भी मनुष्य बनाए। ताकि सारी सृष्टि एक प्रेम की धारा में बहे और अनंत जीवन लाभ करे। कृष्ण के इस कथन में प्रसाद की वह मंगल–कामना निहित है जो संपूर्ण राष्ट्र को सुखी देखना चाहती है। तत्कालीन अव्यवस्थित भारत में प्रसाद समरसता लाना चाहते थे। प्रसाद मानवता का विकास करके समता फैलाना चाहते हैं। अर्जुन जहां कृष्ण से झाड़ियों में छिपकर दस्युता करने वाला नागजाति के संबंध में कहते हैं कि वे न तो सामने आकर लड़ते हैं न अधीनता स्वीकार करते हैं वहां अंग्रेजी राज्य पर व्यंग्य है। पर कृष्ण मानतवा के विकास की बात कहते हैं। कृष्ण जब अर्जुन से खाण्डवदाह के बारे में कहते हैं तो अर्जुन कहता है कि एक और तो आप विश्वभर की एकता की बात कह रहे थे और दूसरी ओर इतने प्राणियों की हिंसा, तो इस पर कृष्ण कहते हैं – ''... जो जिस योग्य हो उससे वैसा ही संघर्ष करना पड़ेगा। ... विश्व मात्र को एक रूप में देखने से यह सब सरल हो जाता है। तुम इसे धर्म और भावना का कार्य समझकर करो, तुम 'मुक्त' हो। बस अर्जुन इस विषम व्यापार को सम करो। दुर्वृत्त प्राणियों को हटाया जाना ही अच्छे विचारों की रक्षा है। आत्म सत्ता के प्रवाहक संकुचित भावों को भस्म करो। लगा दो इसमें आग।'' यहां कृष्ण के माध्यम से प्रसाद ने कर्मयोग द्वारा लोकसंग्रह की

बात कही है। प्रसाद जी ने प्रायः सभी नाटकों में कर्म को महत्व देते हुए समस्त विश्व में एकसूत्रता की बात कही है। गांधी जी ने भी समस्त जातियों एवं संप्रदायों के मध्य एकता स्थापित करने पर बल दिया था। गांधी जी राष्ट्रोद्धार के लिए सब जातियों का एकजुट होना अनिवार्य मानते थे। इसी को प्रसाद जी ने अपने नाटक में मिथकीय पात्रों द्वारा प्रस्तुत किया है।

मनसा अपनी जाति के प्रति पूरी तरह समर्पित है। परंतु जाति के सम्मान के लिए वह संकीर्ण सांप्रदायिकता के रंग में रंग जाती है। वह अपने गौरवपूर्ण अतीत का स्मरण करती है। जहांनागों का आर्यों के सदृश विस्तृत राज्य था। उसके हृदय में आर्य–जाति के प्रति रोष है। उसकी दृष्टि में कृष्ण ही नाग जाति के विनाश का कारण है। वह सरमा से कहती है–''ओह, इन्हीं की तुम प्रशंसा करती हो, जिनके अत्याचार से निरीह नागों का निर्वासन हुआ, और दुर्गम हिमावृत चोटियों के मार्ग से कष्ट सहते हुए उन्हें इस गांधार देश की सीमा में आना पड़ा। देखो, अपने आर्यों की यह समता। फिर यदि नागों ने आभीरों से मिलकर यादवियों का अपहरण किया, तो क्या बुरा किया। यदि नागराज तक्षक ने शृंगी ऋषि से मिलकर परीक्षित का संहार किया, तो क्या अनिष्ट किया? इस विश्व में बुराई भी अपना अस्तित्व चाहती है। मैंने नागजाति के कल्याण के लिए अपना यौवन एक वृद्ध तपस्वी ऋषि को अर्पित कर दिया है। केवल जातीय प्रेम से प्रेरित होकर मैंने अपने ऊपर यह अत्याचार किया है।'' मनसा के हृदय में अपनी जाति के प्रति असीम स्नेह का भाव है। और यही जाति प्रेम आगे चलकर संपूर्ण राष्ट्र के लिए घातक सिद्ध होता है। यही दिखलाना प्रसाद जी का उद्देश्य है।

मनसा जनमेजय के अश्वमेध यज्ञ के अश्व को पकड़ने की योजना बनाती है। वह युद्ध की अग्नि में अपने पुत्र आस्तीक को भी झोंक देना चाही है परंतु वह उसे अहिंसा का संदेश देता है जिससे मनसा भड़क कर अपने पुत्र को त्याग देती है। मनसा नागपति को प्रतिहिंसा के लिए उकसाती है। किंतु यहां भी नाटककार ने मनसा का हृदय परिवर्तन किया है। मनसा जब जनमेजय का अश्व पकड़ने के लिए नागों को बुलाती है तो नागों और जनमेजय के सैनिकों के मध्य युद्ध होता है जिसमें भीषण रक्तपात और घायलों को देखकर मनसा का हृदय दुःखी हो उठता है। वह अपने किए पर पछताती है। और अपने को इस प्रतिहिंसा और सांप्रदायिक संघर्ष का कारण मानते हुए कहती है–''क्या मैं इस उत्तेजना की एक सामग्री नहीं हूं? हाय–हाय! मैंने ही तो इस नाग–जाति को भड़काया था। आज देख रहे हो, यहां कितने घायल पड़े हैं। जाति के अवशिष्ट थोड़े–से लोगों में भी कितने ही बेकाम हो गए और कितने जलाए गए। जान पड़ता है कि इस जाति के लिए प्रलय समीप है। इस परिणाम का उत्तरदायित्व मुझ पर है। हां, मैंने यह क्या किया।'' मनता का यह पश्चातपूर्ण संवाद जातीयता की संकीर्ण भावना से ऊपर उठकर राष्ट्रीयता के विषय में सोचने को बाध्य करता है। केवल यही नहीं वह नाग जाति एवं आर्य जाति के बीच संधि करके मैत्री–भाव स्थापित कराना चाहती है ताकि दो विरोधी शक्तियां एक हों और हिंसा का विनाश हो। वह कहती है–''आर्य सम्राट! मेरा समस्त विद्वेष तिरोहित हो गया। मैं चाहती हूं आज से नाग जाति विद्वेष भूलकर आर्यों से मित्र–भाव का व्यवहार करे और आर्यगण भी उन्हें अनार्य और अपने से बहुत दूर न मानें। मैं आस्तीक के नाम पर प्रतिज्ञा करती हूं कि आज से कोई नाग कभी आर्यों के प्रति विद्रोह का आचरण न करेगा।''

व्यास के विचारों में गांधीवादी प्रभाव स्पष्ट लक्षित होता है। जिस प्रकार से गांधी ने अपने अहिंसा, असहयोग आंदोलन द्वारा समस्त भारत का कल्याण चाहा उसी प्रकार व्यास समस्त विश्व का कल्याण चाहते हैं। वे कहते हैं – ''पुत्री शीला, तुम आर्य ललनाओं के समान ही अपने पति के सत्कर्मों में सहकारिणी बनो। ... शुद्ध–बुद्धि की शरण में जाने पर वह तुम्हें आदेश करेगी, और सीधा पथ दिखलाएगी। जाओ, तुम सबका कल्याण हो, और सबका तुम लोगों के द्वारा कल्याण हो।'' व्यास सत्य को महान धर्म मानते हैं। सत्य ही विजयी होता है। गांधी जी ने भी सत्याग्रह आंदोलन चलाया था। वे सत्य को परम ध्येय मानते थे। वे जनमेजय को आस्तीक के पिता की हत्या की क्षतिपूर्ति के लिए भी कहते हैं और ब्राह्मणों को जनमेजय ने निर्वासित किया पर पुनः विचार करने के लिए कहते हैं। जनमेजय उनसे प्रभावित हो सत्पथ पर आ जाता है। अंत में व्यास प्रसाद जी के उद्देश्य को पूरा करते हुए गांधीवादी विचारधारा के अनुसार मंगल कामना करते हैं कि वह पृथ्वी ज्ञान–धारा से अनंतकाल तक सिंचित होगी। लोक में कल्याण और शांति का प्रचार होगा। सब सुखपूर्वक रहेंगे।

'जनमेजय का नागयज्ञ' द्वारा प्रसाद जी ने दिखाया है कि दो जातियों का आपसी वैषम्य, अपने हितों और मान–सम्मान की रक्षा को ध्यान में रखने वाली प्रतिशोध की भावना संघर्ष को, युद्ध को आमंत्रित करती है। आस्तीक द्वारा नागयज्ञ रोकना हिंसा पर अहिंसा की विजय है। वह संघर्ष को शांति में बदलने की मांग करता है जो गांधीवादी विचारधारा से प्रभावित है नाटककार ने विश्व–बंधुत्व का संदेश दिया है। जाति भले ही भिन्न हो परन्तु एक ही संस्कृति के अभिन्न अंग हैं। युद्ध के बल विनाश तक पहुंचाता है और शांति संस्कृति का विकास करती है। प्रतिशोध से क्षमा श्रेष्ठ है और युद्ध से विश्व–बंधुत्व की भावना। इन पौराणिक मिथकीय पात्रों द्वारा प्रसाद जी ने अपने सांस्कृतिक मूल्यों के प्रति लगाव को स्पष्ट किया है। साथ ही तत्कालीन भारत में व्याप्त सांप्रदायिक दंगों को भी प्रस्तुत किया है।

संदर्भ ग्रंथ

1.जयशंकर प्रसाद : जनमेजय का नागयज्ञ, भूमिका।
2.जयशंकर प्रसाद : जनमेजय का नागयज्ञ, भूमिका, पृ. 25.
3.वही, पृ. 89.
4.'उत्तंक–सम्राट की किंकर्त्तव्यविमूढ़ होना शोभा नहीं देता। .... दुराचारी कोई क्यों न हो, दंड से मुक्त न रहे। सम्राट अपने पिता का प्रतिशोध लीजिए, जिसमें इस ब्रह्मचारी की प्रतिज्ञा भी पूरी हो। इन पुर्वृत नागों का दमन कीजिए।'
– वही, पृ. 51.
5.वही, पृ. 51.
6.जयशंकर प्रसार : जनमेजय का नागयज्ञ, भूमिका, पृ. 74–75.
7.वही, पृ. 75.
8.वही, पृ. 85.
9.वही, पृ. 91.
10.वही, पृ. 79.
11.वही, पृ. 82.

12.वही, पृ. 15.
13.वही, पृ. 17.
14.वही, पृ. 18.
15.वही, पृ. 86.
16.वही, पृ. 93.
17.वही, पृ. 69.
18.वही, पृ. 94.

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- Google Scholar
- EBSCO
- DOAJ
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Indian Streams Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.org